# अथ श्री दादाजीकी विधि संयुक्त चैत्यवंदन स्तवन.

# ॥ स्तोत्रादि पूजासंग्रह ॥

परमपूज्य जैनधर्मोपदेष्टा न्यायाम्भोनिधि
विद्वद्वर्य जैनाचार्य कृपाचंद्रसूरिजी
महाराजके शिष्य पं. जीतसागरजीका
सदुपदेशसे छपाके प्रसिद्ध करनार,

## मालू–तगामल मानमल.

बाडमेर–मारवाड.

पं। नेमिचन्द्र यतिके प्रबन्धसे
श्री जैन विद्याविजय प्रीन्टींग प्रेसमां
शा. पोपटलाल अमथाशाहे छाप्युं,
रीचरोड–अमदावाद. नं. ११६
संवत १९७८–सने १९२१.
द्वितियावृत्ति.–प्रत १०००.
किम्मत अमूल्य.

॥ श्री गुरुभ्योंनमः ॥

# अथ श्रीदादासाहेबकी पूजा
# और चैत्य वंदन स्तवन स्तोत्रादि
# संग्रह ॥

अथ पहली थापना स्थापन करके
आवाहनका श्लोक पढे ।

कुलगुणगरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान् ।
शमदमऋजुष्टांश्चारुचारित्रनिष्ठान् ।
निखिलजगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान् ।
मुनिपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्त श्रीजिनकुशल श्री जिनचन्द्रसूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्त अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा इति प्रतिष्ठापनम् ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्तसूरिगुरो अत्र मम संनिहितो भव वषट् इति संनिधीकरणम् ॥३॥ अथ जलका कलश लेके स्नानकर्ता शुचि होके खडा रहे ॥

अथ स्तुतिप्रारम्भः ।

दोहा–ईश्वर जग चिंतामणी, कर परमेष्ठी ध्यान । गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥ सौधर्मा मुनिपति प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट । मिथ्यामततमहरणको, भव्य दिखावन वाट ॥२॥ सुस्थित सुप्रतिबद्ध गुरु, सूरिमंत्रको जाप । कोटि कियो जब ध्यान

धर, कोटिकगच्छ सुथाप ॥३॥ दश पूर्व्वी श्रुतकेवली, भये वज्रवर स्वाम । तादिनतें गुरुगच्छको, वज्रशाख भयो नाम ॥४॥ चंद्रसूरि भये चंद्रसम, अतिही बुद्धि निधान । चंद्रकुली सब जगतमें, पसर्यो बहु विज्ञान ॥५॥ वर्द्धमानके पाट पद, सूरि जिनेश्वरमाश । चैत्यवासिकुं जीतकर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥६॥ अणहिल्पुर पाटणसभा, लोक मिले तिहाँ लक्ष । खरतर विरुद्ध सुधानिधि, दुर्लभ राजसमक्ष ॥७॥ अभयदेवसूरि भेय, नवअंगटीकाकार । थंभण पारस प्रगट कर, कुष्ठ मिटावनहार ॥८॥ श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरू, रचना शास्त्र अनेक । प्रति बोधे श्रावक बहुत, ताके पट्टविशेष ॥९॥ हुंबड श्रावक बापडी, अट्ठारे हज्जार । जैन दयाधर्मी किये,

वरते जैजैकार ॥१०॥ दादानाम विख्यात जस, सुर नर सेवक जास । दत्तसूरि गुरु पूजतां, आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥ दिल्लमें पतसाहने, हुकम उठाया शीस । मणिधारी जिनचंद गुरु, पूजो बिसवावीस ॥ १२ ॥ ताके पट्ट परंपरा, श्रीजिनकुशल सूरिंद । अकबरकुं परचा दिया, दादा श्रीजिनचंद ॥१३॥ ऐसे दादाच्यारकूं, पूजो चित्त लगाय । जल चंदन कुसुमादि कर, ध्वज सौगंध चढाय ॥ १४ ॥

चाल दादा चिरंजीवो ए दशी ॥

गुरुराजतणी कर पूजन भवि सुखकर मिलसी लब्धि धणी ए आंकणी गुरु दत्तसूरिंद जग सुखकारी गुरु सेवकने सानिधकारी गुरु चरणकमलनी बलिहारी गुरु १ संवत

इग्यारे बार शशी बत्तीसे जनम्यां शुभ दि-
वसी श्रावककुल हुंबडनें हुलसी गु० २ जसु
बाछिगसा पितुनाम भणे बाहड्दे माता हर्ष
घणे इकतालीसे दीक्षापभणे गु० ३ गुणह-
तरे वल्लभ पाटधरी गुरु मायाबीजनो जाप
करी गुरु जगमें प्रगट्या तरणतरी गु० ४
मणिधारी जिनचंद उपकारी जिनदत्तसूरिंद-
के पटधारी भये दादा दूजा सुखकारी गु०
५ राशल पितु देल्हणदे माता श्रीमाळगोत्र
बोधन साता दिल्ली पत साह सुगुण गाता
गु० ६ जसु चौथे पाट उद्योत करी जिन
कुशल सूरिंद अति हर्ष भरी तेरेसे तीसे
जनम धरी गु० ७ जसु जिल्हा जनक
जगत्र जियो वर जैत सिरी शुभ स्व-
पन लियो गुरु छाजेडगोत्र उद्धार कियो

गु० ८ घन सैंतालीसे दीक्ष धरी जिन चंद्र-
सूरीश्वर पाटवरी गुणहतरे सूरि मंत्र जाप
करी गु० ९ सेवामें बावन वीर खरा जोग-
णियां चौसठ हुकम धरा गुरु जगमें कइ उ-
पकार करा गु० १० माणक सूरीश्वर पद
छाजे जिनचंद्रसूरी जगमें गाजे भये दादा
चोथा सुख काजे गु० ११ जिण चांद उगायो
उजियारो अम्मावसकी पूनमवालो सब श्रा-
वक मिल पूजन चालो गु० १२ जिण अकब-
रकूं परचा दीना काजीकी टोपी वश कीना।
बकरीका भेद कह्या तीना गु० १३ गंधोदक
सुरभि कलश भरी प्रक्षालन सद्गुरु चरण
परी या पूजन कवि ऋद्धिसार करी गु० १४

श्लोकः।

सुरनदी जलनिर्मलधारकैः प्रबलदुष्कृतदाधनि-

[illegible]रकैः । सकलमङ्गलवांछितदायकौ कुशलसू-
रिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्त-सूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थलाय श्रीजि-नचन्द्र सूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकब्बरेअसुल्त्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनच-न्द्रसूरीश्वराय जलं निर्व्विपामिते स्वाहा॥१॥

अथ द्वितीय केशर चंदनपूजाप्रारंभः।

दोहा—केशर चंदन मृगमदा, कर घन-सार मिलाप । परचा जिनदत्तसुरिका, पूज्यां तूटे पाप ॥ १ ॥

चाल वीण बाजेकी.

धीनके दयालु राज सार (२) तूं ।

आंकणी । आये भरुअच्छ नगर धाम

धूप धू २ बाजते निशान ढोर हर्ष रंग हूं
ह० दी० १ मुसलमान मुगलपूत फौज मौज-
मूं । फोत मोत होगया हायकारसूं हा० दी०
२ सघ्र विघ्र देख आप हुकम दीन यूं । लावो
मेरे पास आस जीवदान दूं जी० ३ दी०
मृतक पूत मंत्रसे उठाय दीन तूं देखके अ-
चंभ रंग दास खासकूं दास खासकूं द० ४
दी० करत सेव भावपूर तुरकराज जूं । छो-
डके अभक्ष्य खान हाजरी भरुं हा० ५ दी०
बीज खीजके पडी प्रतिक्रमणके मूं । हाथसे
उठाय पात्र ढांक दीन छूं ढा० ६ दी० दा-
मनी अमोल बोल सिद्धराज तूं । देउं वर
दान छोड बंदकी न क्यूं बंधकीन क्यूं बं० ७
दृष नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर मैं
पडूंगी नांह छोड दीन फूं छो० दी० ८ करोगे

निहाल आप पाव पलकनूं रामऋद्धिसार दास चरण छांह लूं न०९ ॥ श्लोक—मलयचन्दनकेशरवारिणा निखिलजाड्यरुजातपहारिणा । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन दत्त० केशरचन्दनं निर्व्विपामिते स्वाहा॥२॥

## अथ तिजी पुष्पपूजा.

दोहा—चंपा चमेली मालती, मरुवा अरु मचकुंद । जो चाढे गुरुचरणपर, नित घर होय आनंद ॥१॥ नींद तो गई वादीला मारी. ए चाल—राग मांड । गुरु परतिख सुरतरुप सुरतरुसम दूजो तो नहीं । दूजो तो नहीं रे सुमति जिन दूजो तो नहीं । गुरुप० सु० गुरुने पूजो तो सही । ए आंकणी । चितोड नगरी वज्रथंभमे विद्या पोथी रहीरे सु० वि० हेजी मंत्र जंत्र विद्यासे पूरी गुरु मिजहाय

ग्रही गु० गुरुपर० १ पुरउज्जयिनी महाका-
लके मंदिर थंभ कहिरे सुम० हेजी सिद्ध-
सेन दिनकरकी पोथी विद्या सरब लही रे
सु० वि० गुरुप० २ उज्जयिनी व्याख्यानबीच-
में श्राविका रूप ग्रहीरे सु० श्रा० हेजी जो-
गनियां छलनेकुं आई सबको खील दई गु०
॥३॥ गु० दीन होय जोगणीयां चोसठ गु-
रुकी दास भइरे हेजी सात दिया वरदान
हरषसें पसर्या सुयश मही प० गु० ४ पुष्प-
माल गुरुगुणकी गूंथी चाढो चित्त चही रे
सु० चा० हेजी कहे रामऋद्धिसार सुयशकी
बूटी आप दई बू० गु० ५ श्लोक-कमलच-
म्पककेतकीपुष्पकैः परिमलाहृतषट्पदवृन्दकैः
। सकल० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्त० पुष्पं
निर्व्विपामि ते स्वाहाः ॥ ३ ॥

## अथ चोथी धूपपूजा.

दोहा—धूप पूज कर सुगुरुकी, पसरे परिमल पूर। जस सुगंध जगमें बधे, चढे सवाया नूर।

राग सोरठ—कुबजाने जादू डारा ए चाल।
अंबिका विरुद बखाने गुरु गुरु तेरो अं०। तुमयुगप्रधान नहिं छाने गु०। ए आंकणी। गढ गिरनारपै अंबड श्रावक ऐसो नियम चित्त ठाने। युगप्रधान इस युगमें कोई देखूं जन्म प्रमाणे। गु० अं० १। कर उपवास तीन दिन बीते प्रगटी अंबा ज्ञाने गु०। प्रगट होय करमें लिख दीना सुवरन अक्षर दाने। गु० अं० २ या गुणसंयुत अक्षर बांचे ताको युगवर जाते॥ गु०॥ अंबड मुल्क २ में फिरता सूरि सकल पतवाने॥ गु०

३ ॥ आया पास तुम्हारे सद्गुरु कर पसार दिखलाने ॥गु०॥ वासक्षेप उन ऊपर डाला चेला बांच सुनाने ॥ गु० ॥ अं० ४ ॥ सर्व-देव हैं दास जिनोंके मरुधर कल्प प्रमाणे ॥ युगप्रधान जिनदत्त सूरीश्वर अंबड शीश झु-काने ॥ गु०॥५॥ उद्योतन सूरीने निज हाथे चौरासी गच्छ ठाने ॥ सो सब तुम्हारी सेवा सारे चौरासी गच्छ माने गु० ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमको न पूजे सो नहीं तत्त्व पि-छाने । भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्त्तन कीनी ग्रंथ प्रमाणे ॥ गु० ७ ॥ युगप्रधान परिकीए गंडिका गणधर पदवृत्ति माने । कहे राम-ऋद्धिसार गुरुकुं पूजा धूप कराने ॥गु० ८॥

श्लोक-अगरचन्दनधूपदशांद्गजैः प्रसरिताखिल-दिशु सुधूमकैः । सकल मं०४ औँ ह्रीं श्रीँ

पर० धूपं निर्व्विपामिते स्वाहा ॥ ४ ॥

अथ पांचमी दीपपूजा.

दोहा-दीप पूजकर सुगण नर, नितर मंगळ होत । उजियाळा जममें जुगत रहे अखंडित जोत ॥ १ ॥

चाल ख्यालकी ।

पूजन कीज्योजो नर नारी गुरु महाराज का हो पू० । सिंधुदेशमें पंच नदीपर साधे पांचो पीर । लोई ऊपर पुरुष तिराये ऐसे गुरु सधीर पू० १ । प्रगट होयके पांच पीरने सात दिया वरदान । सिंधु देशमें खरतर श्रावक होवेगा धनवान पू०२ सिंधुदेश मुलतान नगरमें बडा महोच्छव देख । अंबड और गच्छका श्रावक गुरुसे कीना द्वेष पू० ३ । अणहिलपुर पत्त-

नमें आवो तो मैं जानुं सच्चा । बडे महोत्सव आवेंगे तूं निर्धन होगा कच्चा पू० ४ ॥ पत्त-नबीच पधारे दादा सनमुख निर्वन आया । गुरु बतलाया क्योंरे अंबड अहंकार फल पाया पू० ५ । मनमें कपट किया अंबडने खरतर महिमा धारी । जहर दिया उन अशन पान-में गुरु विधि जाणी सारी पू० ६ । भणशाली मुखवर श्रावकसें निर्विष मुद्रो मंगाई । जहर उतारा तब लोकोंमें अंबड निंदा पाई पू० ७॥ मरके व्यंतर हुआ वो व्यंतर रजोहरण हर लीना । भणसाली व्यंतर वचनोंसे गोत्र उतारा कीना पू० ८ ॥ सज्ज होय गुरु ओघा लेके गोत्र बचाया सारा । ऋद्धिसार महिमा सद्‌गुरुकी दीपकका उजियारा पू० ॥९ ॥ श्लोक-अतिसुदीप्तिमयैः खलु दीपकै

विमलकाञ्चनभाजनसंस्थितैः । सकल० ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० दीपं निर्व्विपामि ते स्वाहा ५॥

अथ छठी अक्षतपूजा.

दोहा–अक्षतपूजा गुरुतणी. करो महाशय रंग । क्षती न होवे अंगमें, जीते रणमें जंग ॥ १ ॥ राग आसावरी–अवधूत सो योगी गुरु मेरा ए चाल. रतन अमोलक पायो सु गुरु सम रतन अमोलक पायो । गुरु संकट सबही मिटायो सु० ए आंकणी । विक्रमपुर नगरी लोकनकूं हैजा रोग संतायो । बहुत उपाय किया शांतिकका जरा फरक नहीं आयो ॥ सु० र० १ ॥ योगी जंगम ब्रह्म संन्यासी देवो देव मनायो । फरक नहीं किनहोने कीनो हाहाकार मचायो ॥ सु० र० २ ॥ रतन चिंतामणि सरिखो

साहिब विक्रम पुरमें आयो । जैनसंघको कष्ट
दुर कर जय जयकार वरतायो ॥ सु० र०
३ ॥ महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मण सबही
शीश नमायो । जीवतदान करो महाराजा
गुरु तब यों फुरमायो ॥ सु० र० ४ ॥ जो
तुम समकित व्रतको धारो अबही करदूं उ-
पायो । तहत वचन कर रोग मिटायो आ-
नंद हर्ष बधायो ॥ सु० र० ५ ॥ जो कोई
श्रावक व्रत नहीं धारयो पुत्री पुत्र चढायो
॥ साधु पांचसे दीक्षित कीना साधवियां
समुदायो ॥ सु० र० ६ ॥ मंत्र कला
गुरु अतिशय धारी ऐसो धर्म दीपायो ।
ऋद्धिसार पर किरपा कीनी साचो इलम
बतलायो ॥ सु० र० ॥ ७ ॥

श्लोक—सरलतन्दुलकैरतिनिर्मलै प्रवरमौक्ति-

कपुंजवदुज्वलैः । सकल० आँ ह्रीँ श्रीँ प० अक्षतान निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥३॥

## अथ सातमी नैवेद्य पूजा.

दोहा—नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव । गुरुगुण अगणित कुण गिणे, गुरु भवतारण नाव ॥ १ ॥

राग कल्याण—तेरी पूजा बनी है रसमें ए चाल. हो गुरु किया असुरकुं वशमें ए आं-कणी. बडनगरीमें आप पधारे सांमेला घस मसमें ब्राह्मण लोक बडे अभिमानी मिलकर आया सुसमें ॥ गु०॥१॥ हे गु०महिमा देख शक्या नहीं गुरुकी भरे मिथ्यात्वी गुसमें । मृतक गऊ जिनमंदिर आगे रखदी सनमुख चसमें ॥ हो गु० ॥ २ ॥ श्रावक देख

भये आकुलता कहे गुरुसे कसमें । चिंता दूर करी है संघकी गउउठ चाली इसमेंहो ॥गुरु० ॥३॥ मरी गऊको जीती कीनो लोक रह्या सब हसमें । जाके गाय पडी रुद्रालय संघ या सब खुसमें ॥ हो गु०४ ॥ ब्राह्मण लोग पडे सब गुरुके देख तमासा इसमें ॥ हुकम उठावेंगे शिर ऊपर तुम संततिकी दिशमें । हो गु० ५॥ नमस्कार है चमत्कारको कीनी पूजा रसमें । कहे रामऋद्धिसार गुरुकी आनंद मंगल जसमें ॥ हो गु० ॥ ६ ॥

श्लोक–बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकैः प्रचुरसर्पिषि पक्वसुखज्जकैः । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० नैवेद्यं निर्व्विपामिते स्वाहा ॥ ७ ॥

## अथ आठमी फल पूजा.

दोहा–फलपूजासे फल मिले, प्रगटे नवे

निधान। चहुदिश कीरत विस्तरे, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥

रथ चढ यदुनंदन आवत हैं ए चाल।

चालो संघ सब पूजनको गुरु समरथ्यां सनमुख आवत है रे ॥ चा० गु० ए आंकणो। आनंदपुर पट्टनको राजा गुर शोभा सुन पावत है रे ॥ चा० १ ॥ भेजा निज परधान बुलाने नृप अरदास सुनावत है रे ॥ चा० लाभ जान गुरू नगर पधारे ॥ भूपति आय वधावत है रे ॥ चा० २ ॥ राजकुमरको कुष्ट मिटायो अचरज तुरत दिखावत है रे॥ चा० ॥ दश हजार कुटुम्ब संग नृपका श्रावकधर्म धरावत है रे ॥ चा० ३ ॥ दयामूल आज्ञा जिनवरकी बारा व्रत उचरावत है रे ॥ चा० ॥ ऐसे

चार राज समकित धर खरतर संघ बनावत है रे ॥ चा० ४ ॥ कुष्ठ जलंधर क्षय भगंदर कइयक लोक जिवावत हे रे ॥ चा० ॥ ब्राह्मण क्षत्री अरु माहेश्वर ओसवंश पसरावत है रे ॥ चा० ५ ॥ तीस हजार एक लख श्रावक महिमा अधिक रचावत है रे ॥ चा० ॥ कहत रामऋद्धिसार गुरुको फलपूजा फल पावन है रे ॥ चा० ६ ॥

श्लोक—पनसमोचसदाफलकर्कटैः सुसुखदैः किल श्रीफलचिर्भटैः ।सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० फलं निर्व्विपामि ते स्वाहाः ८ ।

अथ नवमी वस्त्र अत्तर पूजा.

दोहा—वस्त्र अतरगुरु पूजना, चौवा चंदन चंपेल । दुस्मन सब सज्जन हुए, करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥

मनडोकिमहीन वाजे हो कुंथुजिन. ए
चाल । लखमी लीला पावे रे सुंदर लखमी
लीला पावे । जो गुरु वस्त्र चढावें रे ॥सुं०॥
सुजस अतर महकावे रे ॥ सुं० ॥ दुरजन
शीश नमावेरे सुं० ए आंकणी । दरिया
बीच जहाज श्रावककी डूबन खतरे आवे ।
साचे मन समरे सद्गुरुकुं दुखकी टेर सुना-
वेरे सुं० ॥ १ ॥ वाचंताव्याख्यानसूरीश्वर
पंखी रूपेथावे । जाय समुद्रमें ज्याज तिराई
फिर पीछा जब आवेरे सुं० २ ॥ पूछे संघ
अचरजमें भरिया गुरु सब बात सुनावेरे सुं०
ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु परचा प्रगट दि-
खावेरे सुं० ३ ॥ बोथर गूजरमल श्रावककी
दादा कुशल तिरावे सुं० सूखसूरि गुरु स-
मयसुंदरकी ज्याज अलोप दिखावे रे सुं०

४ ॥ बारासै इग्यारे दत्तसूरि अजमेर अ-णसण ठावे । उपज्याःसोधर्मा देवलोके सो-मंधर फुरमावेरे सुं० ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी मुक्ति नगरमें जावेरे सुं० ॥ कुशल सूरि देराउर नगरे भुवनपती सुरथा-वेरे सु० ६ ॥ फागण वदि अम्मावस सोभा पूनम दरश दिखावे रे सुं० ॥ मणिधारी दिल्लीमें पूज्यां संकट सु ाने नावेरे सुं० ७ ॥ रथो उठो नहीं देख बादसा वांहो चरण पधरावे रे सुं० । वस्त्र अनर पूजा सद्गुरुको ऋद्धिसार मन भावे रे सुं० ८ ॥

श्लोक–अखिलहोरशुभैर्नवचोरकैः मवरमार रणैः खलु गन्धतः । सकल० ॥ ओँ ह्रीँ श्री पं० वस्त्रं चोवाचन्दपुष्पसारं निर्विघ्नपामिते स्वाहा ॥ ९ ॥

## ॥ अथ दशमी ध्वज पूजा ॥

दोहा–ध्वजपूजा गुरुराजकी, लहके पवन प्रचार। तीन लोकके शिखरपर, पहुंचे सो नर नार ॥ १ ॥

चाल–जिनगुण गावत सुरसुंदरीरे ए चाल। ध्वजपूजन कर हरख भरीरे। ध०। सज सोले शिणगार सहेल्यां श्रीसद्गुरुके द्वार खरी रे ध०। अपछर रूप सुतन सुकलीनी टम २ पग झणकार करीरे। ध०१। गावत मंगल देत प्रदक्षिणा धन २ आनंद आज घरीरे। ध०। निर्धनको लखमी बकसावत पुत्र विना जाके पुत्र करी रे ध० २। जो जो परतिष परचा देख्या सुनो भविक दिलबीच धरी रे ॥ ध०। फतेमल्ल भडगतिया श्रावक पहली शंका जोर करीरे ध० ३। परातख देखूं तब मैं जाणुं प्रगट्या

ततखिण तरण तरीरे ध० । पुष्पमाल शिर केशर टीको अधर श्वेत पोशाक करीरे ध० ४ । मांग २ वर बोले वाणी फरक बतावो गुरु मेघझरीरे ध० फरक उगायो दोय लाख पर तरी महिमा नित्त हंरीरे ध० ५ । गैन-चंद गोलेछाको तें परतिख दीना दरस फ-रीरे ध० । विक्रमपुरमें थुंभ तुम्हारा चित्र करावत सुरसुंदरीरे ध० ६ । थानमल्ल लूण्यां-पर किरपा लखमां लीला सहज वरीरे । लखमीपति दुगडकी साहिब हुंडीकी भुग-तान करीरे ध० ७ । जो उपकार कऱ्या तै मेरा दीना सनमुख अमृत झरीरे ध० । तेरी कृपासे सिद्धी पाई जागे जस अरु भाग भ-रीरे ध० ८ । भूखा भोजन तिसिया पानी भरत हाजरी देव परोरे ध० । बिखम बख्त

पर सहाय हमारे ऋद्धिसारकी गरज सरोरे ध० ९ ॥

श्लोक—मृदुमधुरध्वनिकिङ्किणी ; नादकै र्ध्वजविचित्रितविस्तृतवासकैः । सकल० शिखरोपरि ध्वजाम् आरोपयामि स्वाहा ॥

दोहा—भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृंद । कंठ विराजत सरस्वती, जगमें श्रीजिनचंद ॥ राग आसावरी—अथवा धनाश्री । पूजन जगजगसुखकारी सुगुरु तेरी पूजा० । तेरे चरणकमल बलिहारी सु० । साह सलेमी दिल्लीको बादस्या सुनके शोभ तिहारी । भट्ट हरायो चरचा करके भट्टारकपद धारी सु· १ । अम्मावसकी पूनम कीनी चंद उगायो भारी । चढके गगन करी है चरचा सूरजसे तपधारी सु० २ चौदासे

उगणीस शाळमें लखनउ नगर मझारी। गोरा फिरंगी टोपीवाला दिलमें यह बात विचारी सु० ३ जैन सितांबर देव जो सच्चा पूरे मनसा हमारी। वाणी निकसी राज्य तुम्हारा होवेगा अधिकारी सु० ४। अंधे-की खोली आंरत मूरतमें पूजे सब नरनारी। कहां लगे गुण बरणूं मै तेरा तूं ईश्वर जय-कारी स० ५ ।उगणीसे संवत्सर तेपन मगसर मासमझारी। शुकल दूज जिनचंद सूरीश्वर खरतरगछ आचारी सु० ६। कु-शलसूरिके निजसंतानी क्षेमकीर्ति मनुहारी। प्रतिबोध्या जिन क्षत्री पांचमे जानसहित अणगारी सु० ७॥ क्षेमधाड शाखा जब प-गटी जगमें आनंदकारी। धर्मशील साधू गुणपूरे कुशलनिधान उदार। सु० ८। या

पूजन करतां सुख आनंद अने अन धन लखमी सारी । कहत रामऋद्धिसार गुरूकी जय २ शब्द उचारी सु० ९॥ इति श्रीसमस्तदादागुरूपूजा संपर्ण॥

---

## ॥ अथ आरती लिख्यते ॥

जय जय गुरू देवा आरति मंगल मेवा आनंद सुख लेवा । ज० । आंकणी । इक व्रत दुय व्रत तीन चार व्रत पंच व्रतमें सोहे गु० । जगत जीव निसतारण सुर नर मन मोहे ज० १ । दुःख द्रोह सब हर कर सद्‌गुरू राजन मतिबोधे । सुत लखमी वर देकर श्रावककुल सोधे ज० २ । विद्या पुस्तक घर कर सद्‌गुरू मुगलपूत तारे । वस कर जोगन चौसठ पांच पीर सारे ज० ३ । बीज

पडंती वारी सदूगुरू समंदर जहाज तारी। वीर किये बस बावन भगटे अवतारी ज० ४ ।:जिनदत्त जिनचंद कुशल सूरि गुरू खरतरगच्छ राजा। चोरासी गच्छ पूजे मन वांछित ताजा ज०५॥ मन शुद्ध आरती कष्टनिवारण सदूगुरूकी कीजे। जो मांगे सो पावे जगमें जस लीजे ज० ६। विक्रमपुरमें भगत तुम्हारो मंत्र कलाधारी। नित उठ ध्यान लगावत मनवांछित फळ पावत राम ऋद्धिसारी ज० ७॥ इति पद॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

जिन पद कुल सुखरस अनिल। मितरस गुणधारी प्रबल सबल धन मोहकी। जिणते चमुहारी॥१॥ ऋजुआदिक जिनराज गीत। नयतन विस्तारो। भव कूपे मापें पडत।

जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके आचारिज पदसार । तिनकुं वंदे हीर धर्म । अठोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद नमस्कारः ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

जंकिंचि नाम तित्थं । सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयं संबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं

लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं च-
क्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिद-
याणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं ।
धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरं-
तचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाण दं
सण धराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं
जावयाणं तिन्नाणं तारियाणं बुद्धाणं बोह-
याणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं
सव्वदरिसिणं सिव मयल मरुअ मणंत म-
क्खय मव्वाबाह सपुणराविति सिद्धिगइ
नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअ
भयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ
भविस्संति ॥ णागए काले ॥ संपइ अ व-
ट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

जावंति चेइआइं उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे इहसंतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

भगवन् जावंत केवि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणओ ॥ तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ इति ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः॥

॥ अथ गुरुदेवजीका स्तवन ॥ राग प्रभाती ॥

श्री जिनदत्त सूरिंदा परम गुरु ॥ श्री जि० ॥ परम दयाल दयाकर दीजे । दरिसन परम आनंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ जंगम सुरतरु वंछित दायक सेवक जन सुखकंदा ॥

सद्गुरू ध्यान नाम नित समरण दूर हरण दुःख दंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ १ ॥ निजपद सेवक सांनिधकारी, राखीये गुरू रोजिंदा ॥ करजोडी विनय युत विनवे श्रीजिनहरख-सूरिंदा ॥ प० श्री० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

जयवीअराय जगगुरू । होउ ममं तुह प्पभावओ भयवं भव निव्वेओ मग्गाणु-सारिआ इट्ठ फलसिद्धि ॥ १ ॥ लोग वि-रुद्ध च्चाओ ॥ गुरूजणपूआ परत्थकरण च ॥ सुह गुरू जोगो तव्वयण सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥

श्री आचार्यपद आराधनार्थं करेमि काउसग्गं

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए ॥ सक्कारव-

त्तिआए सम्माणवत्तिआए ॥ बोहिलाभव-
त्तिआए । निरूवसगवत्तिआए । १ । व
ड्ढाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए
॥ वड्ढमाणीए ठामि काउसग्गं ॥२॥ इति ॥

॥ अथ अन्नत्थउससिएणं ॥

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासि-
एणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिस
ग्गेणं भमलिए पित्त मुच्छाए ॥ १ ॥ सुहु-
मेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेल संचा-
लेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं ॥ २ ॥
एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अभग्गो अविरा-
हिओ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न
पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं

झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ एकनवकारनो काउसग्ग करवो पारी एक थुई वोलवी ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुतिः ॥

पंचाचारकुं पालै उजवालै दोषरहित गुणधारीजी ॥ गुणछत्तीसें आगमधारी द्वादश अंग विचारीजी ॥ प्रवल सवल घनमोह हरणकुं अनिल समोगुणवाणीजी । क्षमा सहित जे संयम पालै आचारज गुण ध्यानीजी ॥ इति आचार्य पद स्तुतिः ॥

॥ श्री दादाजीको वृद्ध स्तवन लि० ॥

विलशेऋद्धि समृद्धि मिलि । शुभयोगे पुण्यदशा सफली । जिन कुशलसूरि गुरू अतुल वली । मनवंछितआपै दादो रंगरली ॥ १ ॥ मंगललील सर्वें विपुला । नवनवय

महोछव राजयला । सुपसायें गुरु चढती कला । सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दीन थाये सबला । सदवास कपूर तणा कुरला । हय गय रथ पायक बहुला । किल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ बीझैं चमर निसाण घुरै । नरवै दरबार खडा पुहरै । जय जय करजोडी उचरे । सांनिद्ध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पांन सदा । दुख रोग दुकाल न होय कदा । अविचल ऊलट अंग मुदा । गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम मादल नाद घुमें । बत्तीसे नाटक रङ्ग रमें । प्रगटयो पुण्य प्रताप हमै । सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तन सुख मन सुख चीरतनें । पहिरे बेलाउल होयरनें । ध्यावो कुसल-

गुरु एक मनैं । जृंभक सुरमंदिर भरै धनैं ॥ ७ ॥ ततखिण धण खंच्यो आवे । करि स्यामघटा मेह वरसावै । तिसियां तोय तुरत पावै । जलदाता त्रिजग सुजस गावै ॥८॥ लहिरयां जल कल्लोल करै । प्रवहण भवसायर मझिडरै । बूडंता वाहण जे समरै । ते आपद निश्चेसुं उबरै ॥ ९ ॥ खड खड खडग प्रहार वहै । सोदामनि जिम समसेल सहै । कुशल २ गुरुनाम कहै । ते खेम कुशल रिणमझ लहै ॥१०॥ थुंम सकल परचापूरै । श्री नागपूरै संकटचूरै । मंगलोर अधिकै नूरै । देरावर भयटालै दूरै ॥११॥ वीरमपुर वानै सुधरै । खंभाइतपुर बिक्रम नयरै जिणचंद सूरि पाटे पवरै । जसु कीरति महि मंडळ प्रसरै ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम

दक्षिण आगे । उत्तर गुरु दीपै सोभागै ॥ दह दिशि जनसेवा मांगे । श्री खरतर गच्छनी महिमा जागै ॥१३॥ पुरपट्टण जनपद ठामै । गाईजे कुशल नयर गामै पूजै जे नरहित कामैं । ते चक्रवर्ति पदवी पामै ॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरि साखै । सेवकजनने सुखिया राखै । समर्या गुरु दरसण दाखै । श्रीसाधु कीरत पाठक भाखै ॥ विल० ॥ १५ ॥ इति० ॥

॥ श्री जिनदत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि.॥

सिरि सुयदेव पसाय करे । गुरु श्री जिनदत्तसूरि । बंदिसु खरतरगच्छरयण । सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारै वरसै । बत्तीसै जसु जम्म । वांछिगमंत्रि

पिता जणणी । वाहडिदेव सुरम्म ॥ २ ॥
इक्क तालै जिणवइ गहिय । गुणहत्तरे जसु-
पाट वइसाखांवदि छठिदिन । पइ पणमें सु-
रथाट ॥ ३ ॥ अंबड सावय कर लिहिय ।
सोवन अक्षर अंब । जुगपधान जग पयडि-
योए । सिरि सोहै पडिबिंब ॥ ४ ॥ जिण
चउसठि जोगिण जणिय । खित्तपाल बा-
वन्ना साइण डाइण विज्जुलिय । पुहविह
नाम नयन्न ॥ ५ ॥ सूरिमंत बलकर सहिय
। साहियजिम धरणिंद । सावइ साविय ल-
क्ख इग । पडिबोहिय जिणबिंब ॥ ६ ॥
अरि करि केसरि दुठदल ।चउविह देवनी-
काय । आंण न लोपै कोई जुगे । जसु पण-
में नर राय ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यारसमें ।

अजयमेरपुर ठाण। इग्यारस आषाढसुदि सगपत्तन सुहझांण ॥ ८ ॥ श्री जिन वल्लह सुरिपए। श्रीजिणदत्तमुणिंद। विघ्नहरण मंगल करण। करो पुण्य आणंद ॥ ९ ॥

इति श्री जिनदत्तसूरिजिअष्टकं

॥श्रीजिनकुशल सुरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि०॥

रिसहजिणेसर सोहयो। मंगलकेलि निवास। वासव वंदिय पयकमल। जगसहु पूरै आस ॥ १ ॥ ( चोपाई ) चंदकुलं वर पूनिमचंद। वंदो श्रीजिनकुशलमुणिंद। नाम मंत्र जसु महिम निवास। जो समरे। तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मूरु मंडल समियाणो गाम। धण कण कंचण अति अभिराम।

जिहां वसै जिल्हागरमंति । जैतसिरी तसु
घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसै तीसै
जम्म सैंतालै सिर संयम रम्म । पाटण सत-
हत्तरै जसुपाट । निव्यासिये तसु सुरगैवाट
॥ ४ ॥ भूमंडल सरग पायाल । अचिरा-
चिर जुग इण कलिकाल । प्रभुप्रताप
नविमांनै सोय । मैं नबि नयणे दीट जोय
॥ ५ ॥ निरधन लहै धन सुवन्न । पुत्रहीण
पामे बहुपुत्र । असुखी पामे सुखसंतान ।
एकमना करतां गुरुध्यान ॥ ६ ॥ प्रभु सम-
रण आपद सहु टलै । सयल सांति सुख-
संपत्ति मिलै । आधि व्याधि चिंता संताप ।
ते छंडी नवि मंडे व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष
नवि लागै तिहां । प्रभु दरसण उत्कंठा जिहां ।

सेवंता सुरतरुनी छांहि । निश्चे दालिद्र मेटै बांहि ॥८॥ विसहर विस नर विस नरनाह । भूत प्रेत ग्रह व्यतंर राह । प्रभु नांमें जे न करै पीड भाजे भावठ भय भीड ॥९ ॥ रोगसोग सवि नासे दूर । अंधकार जिम ऊगै सूर । मूरख फीटी पंडित थाय । प्रभु पसाय दुख दुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत । तिहां अछे भव-सायर पोत । सो सद्गुरु में भेटयौ आज । रलिय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥

आज घरअंगण सुरतरु फलियो । चिंता-मणि करकमलै मिलियो । उदयो परमाणंद धरे ॥ १२ ॥ आज दीहमें धन्न गिणियो । जुगपवरागम जोमें थुणियो । चंद्रगच्छ म-हिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवी-

पति सेवा। कांई मनावो देवी देवा। चिंता आंणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार वार एकवत भणींजै। श्रीजिनकुशल सूरि समरिजै। सरै काज आयासविणे ॥ १५ ॥ संवत् चउदइक्यासी वरसै। मुलक वाहण पुरमें मनहरसै। अजिअजिणेसर वर भवणें ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण। विघन हरण सहु पाप निवारण। कोई मत संसोधरो मने ॥ १७ ॥ जिम २ सेवै सुरनर राया। श्रीजिनकुशल मुनिसर पाया। जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सद्गुरुगुण अभिनंदैं। ऋद्धि समृद्धे सौ चिरनंदै। मनवंछित फलमुझ हुवो ए ॥१९॥

दादाजी श्रीजिनकुशसुरिजि उत्पत्ति विचारगर्भित स्तोत्र संपूर्ण.

## ॥ अथ श्री दादाजी स्तवन ॥

सद्गुरु करुणानिधान राखो लाज मेरी ॥टेक॥ जै जै जिनकुशलसूरि । समरत हाजर हजूर । महकत जिम जसकपूर । महमाजगतेरी ॥ स० ॥ १ ॥ जापर तुम हो दयाल । छिनमें करदो निहाल । संकटको चूरदेव । दोलतकी ढेरी ॥ स० ॥२॥ तुम हो सुरतरु समान वंछितफल देवो दान । सेवगकों दीनजान । भेटो भवफेरी ॥ स० ॥३ ॥ सरण आयेको राखो लाज । वंछित सब पुरो काज । हरखचंद सरण आये । कीरति सुणतेरी ॥ स० ॥४॥ इति पदम् ॥

॥अथ श्री जिन कुशलसूरिजीको छंद लि. ॥

समरुं माता सरस्वती । कुमारि कर-

जोडा कवि माता कवियण तणा । पुरै वं-
छित कोड ॥ १ ॥ कुशल करण जग कुश-
लगुरु, दायक वंछित देव ! अहनिसि तो ओ-
लग करै । सुन नर सारै सेव ॥ २ ॥ पुर-
पट्टण गामें प्रगट । जग सगले जस वास ।
पुरावदी तौ पालियै । वसैसु दादो वास
॥ ३ ॥ ( छंद मोतीदाम ) दादो वास दियै
दौलत्त । वधै छत्र छाया सेवक वित्त ।
वधारै मांम दिसो दिसवान ॥ धरै इक
चित्त जिके गुरु ध्यान ॥ ४ ॥ पूनम पूनम
पूजै पाय । नवा नवा नैवज वार निपाय ।
चंपावलि केतकि फूल चरच । अनोपम श्री-
फल लेई अरच्च ॥ ५ ॥ लहै घरि सुंदर ल-
च्छि अछेह । संझती सोल वधंती नेह ।
लहै घरनारी कोयण वांण । लहै घरपूत

सपूतसुजांण ॥ ६ ॥ लहै भलगांम सुठांम
भूवाल । लहै ढिगमित भला ढींचाल ॥
लहै घर मंदिर घोडा जोडि । लहै भट से॰
करै करजोडी ॥ ७ ॥ लहै घर मंगल मद
मसत्त । चीर अनोपम मयगल सत्त ।
लहै घर साजण हल किलोल । ल॰
नीतलीला छाकाछोल ॥ ८ ॥ लहै घरकु-
रला कूर कपूर । लहै घरजीमण मोतीचूर ।
लहै मनवंछित भोग विशाल । लहै घर
साल कचोला थाल ॥ ९ ॥ घुरै नि । गोत
तणा गहगट्ट । भणे नित जय २ चार॰
भट्ट । फलै पुत सपूतां बांझि फलंति । विछा-
हा वाल्हा वेग मिलंति ॥ १० ॥ अनेका-
नेक विरुद अपार । दीठो इक काल्हा तूं
दातार । जोहां सहस्स हुवे जो मुक्ख ।

कहुं इक जोडां केइ रुक्ख ॥ ११ ॥ वडा विरुद ताहरा विख्यात । नर नारी सहु आवै जात । गुणेंकर गिरुवो समुद्र सरीस । कह्योमें कोई न करज्यो रीस ॥ १२ ॥

( दुहा )

रीस न करज्यो कवियणां । मैं माहरी मतिलार । कहियो जगमें कुसलगुरु । खरतरगछसिणगार ॥ १३ ॥ ( छंद नाराच ) सिणगार हार सोहए । सुकामधेनु दोहए । धरंत ध्यान जो सदा । टलंतदूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथमतो देराउरै । सुथान सिंधुथीवरै । जेशाण थुंभ जागतो । सुदिठ संघ साबतो ॥ १५ ॥ मुलतांन मीर सेवता । अनेक पीर देवता । फिरो हरैं फतैपुरै । गुरु सदा उदोकरै ॥ १६ ॥ मरोट थांन

मुलगो । एकांत चित्त ओलगो । बीकांण
वान वाधतो । सुथांन थांन साबतो ॥१७॥
प्रभावना रिणीपुरे । नीसाण वाजता धुरे ।
नागोर नांम दीपतो । दाणव्व देव जीपतो
॥ १८ ॥ तोरण तेम सोहए । जगत्त मन्न-
मोहए । सरूप मेडते सही । अपार लच्छी-
जां लही ॥ १९ ॥ महिम्म माल पूरतो ।
लाहोर दुःख चूरतो । कला अनेक आगरे ।
ठत्तोस पवनखूलरै ॥ २० ॥ दादारी करंत
सेव । हिंदुआं तुरकां देव । सदाशुद्ध सांगा-
नेर । जालमी करतं जेर ॥ २१ ॥ अमर-
सरै अनेक । राखतो जुठोडै टेक । मालपुरै
महिमान । खान खान सेवे थांन ॥ २२ ॥
ब्राह्मणपुरे राज रीत । जे तारणे जगत्र जीत ।

सोभित सुख सदयं । बेनातटे विलदयं ॥ २३ ॥ खेजडलै खरो सदा वाहड मेरु संपदा । जोधाण जुग्ग जातरा जुडंति देश देशरा ॥ २४ ॥ वीरम्मपुर तिम्मरी । करंत नृत्य अम्मरी । जालोर जैत संघरी । खंभा-यते खराखरी ॥ २५ ॥ प्रगट्ट आग पाटणें। सूरत सुक्ख सांघणे। अनंत तेज अहम्मदा। सुभंगलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचार भुज्ज सासतो । तुरत शत्रु त्रासतो । उदपुरै जुई-डरे । सेत्रावे कोटडे गुरै ॥२७॥ गुरू सदा उदो करै । एकांत ध्यान जो धरै । भमंत भाण जेतली । कीरत्त कोड तेतली ॥२८॥ (दुहा) कला अनेकां कुशल गुरु । समर्या होय हजूर । अलगी टालै आपदा । जिम अंधारे

सूर ॥ २९ ॥ ( कलश ) सूर तेज जिम नूर दूर आपद भय टाले । माईतां ज्यु मयाकरी । सेवक निज प्रतिपाले । मनवं- छित मायबाप । कुशलगुरु कामितदाता । पूनिम पूजै पाय । रहे जे ध्यानें राता सुप- साद सोमसुंदर सुगुरु अभय सोम ओलग करी प्रगटियो थुंभ पालीपुरे । विजेसिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दादाजी वृद्ध स्तवन ॥

सदगुरुजी थे सांभलो । श्रीजिनदत्तसूरी सही । सेवकने सांनिध करो । पूरो मन- हजगोसहो ॥१ ॥ ( दोलतिदोहो दादाजी संपतिं दो ) दौलतदो गुरु माहरा । थांहरा विरुद्ध अनेक हो ।-तो सेव्यां संकट टले ।

एहीज दादा ताहरी टेकहो ॥ २ ॥ दो० ॥
जीती चौसठ जोगिणी । वसकीया बावन
वीर हो । सिंधमां है तें साधीया । पंचनदी
पंच पीर हो ॥ ३ ॥ दो० ॥ पडिक्रमणां
मांहे बीजलो । वलिय वली झबकायहो ।
थे मंत्री राखोतिका । तूठो वरदे जायहो
॥ ४ ॥ दो०॥ उच्छव करतां उच्चपें । मूओ
मुगलरो पूत हो । जाप करी जीवाडीयो ।
संघ मांहे राख्यो दादै सूत हो ॥५॥ दो०॥
वडनगररे ब्राह्मणें देहर धरो मृत्यु गायहो ।
पंचपरमेष्टि विद्याबलै । पिसुण लगाया दादै
पायहो ॥ ६ ॥ दो० ॥ विक्रमपुर व्यापी
मरी । ते दूरकीया सहु दुःख हो । परवार
पिण पोते कीयो । सहुने दीधो दादै सुख-

हो ॥ ७ ॥ दो० ॥ अंबड हाथे अरूयरे । थे
प्रगटया ततखेवहो । युग प्रधान जग तुं
जयो । आखै अंबिका दैव हो ॥८॥ दो० ॥
थांभो वज्र विदारनें । पोथी परगट कीध
हो । विद्या सोवन अक्षरें । उज्जेणीमांहे लो-
यहो ॥ ९ ॥ दो०॥ इम विरुद घणा छे ता-
हरा । कहितां नावे पार हो । भाग संजोगै
दादौ भेटीयो । अडवडीयां आधारहो ॥१०॥
दो० ॥ हुं छुं सेवक ताहरो । थे आपो ध-
नरिद्धहो । भुवन करति सुपसावले । लाभ
उदै सुख सिद्धहो ॥ ११ ॥ दो० ॥ इति ॥
इति श्री दादाजी गीतं ॥

॥ ( पुनः ) राग जैतसरी ॥

सहाई मेरे श्रीजिनकुशलगुरू ॥ कुशल
करण कलि मांहे प्रगटयो । खरतर गच्छ-

वरु ॥ ( स० ) बावनोचंदन मृगमद मेली ।
पूजो प्रेम भरू ॥ ( स०) ॥ १ ॥ चिंता चू-
रण विघ्न विडारण दालिद्र दूर हरू ॥ (स०)
॥२॥ दिन दिन दिन साहिब चढ़ितै बानें।
ध्यावो ग्यान धरू ( स० ) वाजै जेहना ज-
शना वाजा ठावी ठांमै जरु ॥ ( स० )
॥ ३ ॥ संवत् अढारसमें अडसठै मिगसर
मास थिरु । ( स० ) संघसहित श्रीसद्गुरु
भेटे । श्रीजिनहर्खसरु ॥ (स०) ॥४॥ गांव
गडालै चरण नमंता । तूठो कल्पतरु ॥ (स०)
पाठक श्रीविद्या हेमगणीने । उदयरतन करु
॥ (स०) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥

॥ ( पुनः ) देशीकी चालमें ॥

दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई

दरशण सदा देवो । दादो दीनदयाल सदा दाता समर्था आपै सुखसाता । दादो जग-नायक जगगुरु भ्राता ॥ ( दा० ) ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगलै पूरै । दादो सेवकना संकट चूरै । दादो दुरित हरै सहुनी दूरै ॥ दा० २ ॥ दादा अळगांथी जात्री आवै । दादो देखीने ते सुख पावै । ह्मारां दादा-जीने जोडे कोई नावे ॥ दा० ॥३ ॥ दादो राजनगर मांहे राजै । जिहां सुजश नगारा नित बाजे । दादो छोगालां सेहर छाजै ॥ दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केशर मूकड घोळी । हाथे लेई सोवन कचोली । पूजो दादाजीने मिल २ टोली ॥दा० ५॥ दादो आरतिया आरति टालै । दादो सेवकज-

नर्ने प्रतिपाले । दादौ जिनशासन नित उ-
जवाले ॥ ( दा० ) ॥ ६ ॥ दादो महि-
मावंत महाराजा । दादो राजै खरतरगच्छ-
राजा दादो समरयां सफल करे काजा ॥
( दा० ) ॥ ७ ॥ दादो कुसलसुरिंदबहुगु-
णधारी । दादो परतिख सुरतरु अवतारी ।
जाऊं दादाजीनी हुं बलिहारी ॥ ( दा० )
॥ ८ ॥ दादो श्री जिनचंद सूरिंद पाटे
दादो गाजै गुणियण गहगाटे । जसु-
थान सोहै जगथिर थाटे ॥ (दा०) ॥ ९ ॥
दादो महिर निजर मुझ परिकरिये । दादा
आरति पीडा दुख हरियै । दादा जिम जग
जय कमलावरिये ॥ ( दा० ) ॥१०॥ दादा
सेवगनें सांनिध करज्यो । दादा दुसमननें

दूर हरज्यो । जिणचंदना मनवंछित फल-ज्यो ॥ दा० ॥११॥ इति दादाजी स्तवनं ॥

॥ पुनः ॥

(आषाढे भेरुं आवै इस चालमें) गाजे जिनकुशल गडालै । सेवकना संकट टालै हो ॥ गा० ॥१॥ परतिख गुरु परचा पूरै । सेवकनी चिंता चूरै हो ॥ गा० ॥ २ ॥ छ-तरी नितरी छवोछाजै । विचमें थिर थुंभ विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ झुलरे यात्री मिल आवै । दादोजी दीठां सुख पावे हो ॥ गा० ॥ ४ ॥ केशर घस भरिय कचोली । मांहे वली मृगमद घोलीहो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो पगं नीरपखाली । गावो गुण गीतरसाली-हो ॥ गा० ॥ ६ दादोजी

दुखियां सुख देवै । निरधनीआं मीत धन देवैहो ॥ गा० ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति वहुला । गुरु नामें पामें कमलाहो ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकजासुत सुंदर नारी पामें परिकर सुखकारी हो ॥ गा० ॥ ९ ॥ अलगांथी रोग गमावे । गुरु पूज्यां वंछित पावे हो गुरु तिसियां पाणी । तिणवेला जलधर आणी हो ॥ गा० ११ ॥ ग्रह गोचर जोर जंजालै । पीडा हुवे आलै मालै हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ वागे जगजशना वाजा । राजै खरतरगच्छ राजाहो ॥ गा० ॥ १३ ॥ जसु जैतसिरी वरमाता । जिल्हागर मंत्रि विख्याता हो ॥ गा० १४ ॥ संवत सतरैसै

एक्यासी । काती पूनिम परकाग्नोहो ॥ गा० ॥ १५ ॥ सहु संघसहित सुविलासे । अधिके हर हेत उल्हासे हो ॥ गा० ॥१६॥ इम यात्र करी आणंदे । जिनभक्ति जती सर वंदैहो ॥ गा० ॥१७॥ इतिपदम् ॥

॥ पुनः ॥ ( राग धन्यासरी ) ॥

आयो आयोजी समरंतां दादोजी आयो । संकट देख सेवककुं सद्गुरु । देरावरत ध्यायोजी समरंतां ॥ दा० ॥ १ ॥ दादा वरसै महनें रात अंधेरी । यायपिण सबलौ वायौ । पंच नदी हम वैठे वेडी । दरीयै हो दादा दरीयै चित्त डरायोजी ॥ स० ॥दा०॥ ॥२॥ दादा उच्च भणी पोहचावण आयो । खर-तर संघ सवायो । समयसुंदर कहे कुशल २

गुरु । परमानंद सुख पायोजी । समरंतां दा-
दोजी आयो ॥ ३ ॥

॥ इतिपदम् ॥

राग—लहुरी ॥

भाया भक्तिसुं पूर रहोरे । दुरजन सब दूरहरोरे ( भा० ) मेरे मनमें भक्ति वैरागी । चित्त परणित लगनसुं लागी । मोरी भाग्य दशा अब जागी (जीयाहो) ॥ भा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो । गुरु चरणे चोक पुरावो । वलि अक्षत धवल वधावो ( जीयाहो ) भा० २ ॥ गुरु महिमावंत सवाई । गुरुनाम सदा सुखदाई । गुरु सेव्यां पाप पुलाई ( जीया हो ) भा० ।.३॥ घस केशर भरकै कचोलो । मांहे मृगमद कुंकुम

घोली । गुरु पूजं रचो भरझोली (जीया हो) भा० ॥४॥ श्रीजिनहर्खसुरीसरराजा । वाजै जग जशना वाजा। सत्यरत्न करे सुभकाजा ( जीया हो ) भा० ॥५॥ इति स्ववनम् ॥

राग-केरवो.

कुशलसूरिंद गुरु पूजो भवि हितसुं (कुश०) केशर चंदन कपूर अरगजा । भाव धरि करो पूजा चित्तसुं कुश० ॥ १ ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती मनसुध माल करै भविरुचिसुं ( कुश० ) ॥ २ ॥ अशरण शरण परमगुरु सेवो । धरम ध्यान धरो आतम रुचिसुं ( कुश० ) ॥ ३ ॥ सेवकजनप्रतिपाल जगत् गुरु आशापुरै गुरु घणु दत्तसुं ॥ ( कुश० ) ॥४॥ ध्यानसुधारै ग्यान वधारै ।

रुप रंग देवै चितहि मतसुं ॥ (कुश० ॥५॥ कुशलसूरिंदगुरु सानिधकारी । परतिख परचापूर सतसुं ॥ ( कुश० ) ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा सुविलासी । सत्यरतन सुख एही छतसुं ॥ ( कुश०) ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ राग देवश्री चलत ॥

आज करोरे उच्छाह । श्रीजिनकुशलसूरिंद आगै (आ०) आ आछी वेला नें ओ आछो दाव । इण आछी वेला । क्यूं करो लाज ॥ ( आ० ) ॥ १ ॥ विविधप्रकार पूजो मनरंग । हिलमिल गावो साजन संग ( आ० ) धूप दीप करोनैवेद्यसार । फुल वारीनो नहि जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अक्षत श्रीफल ढोवे जेह । पुत्र कलत्र पांमैं

संपदा तेह ॥ ( आ० ) ॥३॥ सुरनर नारी उभा करजोड । कोण करै ह्यांरा दादाजीनी होड ॥ ( आ० ) ॥४॥ श्रीखरतरगच्छपति सिरदार । राजा राणा सेवै इक्तार ( आ० ) ॥ ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज । कुशल सुरिंदगुरु गरीबनिवाज ( आ० ) ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ख करै उच्छरंग । सत्यरतनमन ग्यान उमंग ( आ० ) ॥ ७ ॥ इति स्तवनम् ॥

( राग बंगालो घाटो )

में निरख्या गुरु महाराज । छतीयां हर्खभरी (में०) अमल अनंत गुण आगरूरे समतारसनो धाम । परम परम परमातमारे । वंछित दायक स्वाम (छ.मे)॥१॥ करुणानिध गुरु दोलतीरे । सेवकजनप्रतिपाल ।

भविजन भक्तै भावसुंरे । ल्यावे भर भर थाल (छ. मे.) ॥ २ ॥ केशर चंदन कुंकु-मारे । भरिय कचोली हाथ । पद्मण आवे मलपतीरे पूजै सहीयर साथ (छ. मे) ॥३॥ कुशलसूरसिर साहिबारे । श्री जिनचंद्रसूरि पाठ । बलिहारी जिनकुशलनोरे । गाजे घणुं गहिगाट ( छ. मे. ॥ ४ ॥ अष्ट सिद्धि सानिध करैरे । सुख संपूरण सार । श्रीजि-नहर्खसूरीसरूरे । सत्यरतन सुखकार ( छ. मे. ) ॥ ५ ॥ इतिस्तवनम् ॥

॥ राग प्रभाति ॥

चरणकी चरणकी चरणकी । वारी जाउं में गुरुराय चरणकी ( वा० ) श्रीजिनदत्त-सूरीसरसद्गुरू । सफळ घडी सेवा चर-

णकी ( वा० ) ॥१॥ प्रथममंगल गुरु रायकी सेवा । अशुभकरम सब हरणकी ( वा० ) ॥ २ ॥ दालिद्रभंजण अरि सब गंजण । पग पग सानिध करणको ( वा० ) ॥३॥ मोह नहीं परवाह अनेरी । शरन ग्रही इन चरणको ( वा० ) ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ख तुम चरणांको दासा । आशा पूरो सुख करण की ॥ ( वा० ) ॥ ५ ॥

॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥

॥ पुनः ॥

कुशलगुरु अब मोही दरशण दीजै । ( अ० ) ऐसी भांति करो मेरे सद्गुरु । ज्युं मन मूढमती जं ( कु० ) ॥१॥ जल दातार बिरुद अमृतरस । श्रवण अंजलि भर पीज ।

सुरतरूसम दरशण विन देख्यां । कहो नयण क्रिम रीझै । ( कुं० ) ॥ २ ॥ परन दयाल कृपाल कृपानिधि । इतनो अरज सुणीजै । परमभगत जिनराज तुमारो अपनो कर जाणीजै ( कु० ) ॥ ६ ॥ इति स्तवनम् ॥

॥ पुनः ॥

कुशलगुरु कुशल करो भरपूर । सेवक जनमन वंछित पूरण। समयां होग्र हजूर ( कु० ) ॥ १॥ परभदयाल प्रेमरस पूरण । अशुभ हरण भये दूर । संघ उद्योकर सद्गुरु मेरा । वीनवे श्रीजिनचंदसूरि (कु०) ॥ (२)

॥ देशीकी चालमें ॥

सद्गुरु पूजण जावस्यां । म्हेतो कुशल-

सूरिंद गुण गाइयां हे माय ॥ (स०) श्री-
फलभेट चढाबस्यां । म्हेंतो चरणांरी पूजर-
चास्यांहे माय ॥ (स०) ॥ १ ॥ मारुदेशमैं
शोभता । नगर बीकानेर राज हे माय ॥
गांम गडाल दीपता । ज्यांरी महीयल म-
हिमा छाज हे माय ॥ (स०) ॥२॥ समर्यां
संकट चूरता । कूशल करण अवतारी हे
माय । सुखदायक श्री संघने । खरतरगच्छ
अधिकारी हे माय ॥ (स०) ॥ ३ ॥ दूर-
देसांतरथी घणा । हिल मेल यात्री आवै
हे माय । लुळ लुळ सीस नमावतां संत सु-
जस मिल गावै हे माय ॥ (स०) ॥ ४ ॥
सज सिणगार मनोहरू । ठम २ पाय ठम-
कावै हे माय । (स०) तन मन मांण को-
भावती गोरी मंगळ गावै हे माय ॥ (स०)

॥ ५ ॥ बिछुड्या साजन मेलवै । अनमी पाय नमावे हे माय । मनरा मनोरथ पूरव । परघरलखमी ल्यावै हे माय (स०) ॥ ६ ॥ विषमी वेला वाटमें । समर्यां सांनिध आवै हे माय । भूख भोजन मेलवै तिसियां नीर मिलावै हे माय ॥ (स०) ॥७॥ यात्री आवै नितनवा । थांन आगल थिर थाट हे माय । सीरणीयां नित सांमठी । गावै गुण गहगार हे माय ॥ (स०) ॥८॥ कुशल सूरिंद गुरु आगलें । भविमिल भावना भावै हे माय । चंद फतै मुनि नित नमें । परमानंद सुख पावै हे माय ॥ (स०) ॥९॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

आयो सहु श्रीसंघ आसधरे । गुरु भौन

गयां कहो केम सरे । दरशण वहिलो सद्‌गुरु दाखो । निज सेवक जांण महिर राखो ॥ १ ॥ इह विषमो वेला आयबणो । कहे-वो करीये तुझ अरज घणी । अलगा छो तो वेगा आवो । हिव ढील घडीभर न करावो ॥ २ ॥ तुं सद्‌गुरु खरतरगच्छ साचो । कोइ न जाणे तुमनें काचो । इण संकटें आलस न करो । दादा दुशमणनें दूर हरो ॥ ३ ॥ कांई चूक पडो सद्‌गुरु हमसुं । तो जिम कहिस्यो तिणपरी खमसुं । पिण हिवणां हठ थे मति तांणो । निहश्चे पोतानो कर जांणो ॥ ४ ॥ आया सहु मिलकर अठां लगे । पाछा किम जावां इणें पगे । इणपरि गुरू सुणीयें अरज इसो । हिव सबकों मेलो करीय खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल

सूरिसर जगचाव्रो । अपणायतकर वेगा आव्रो । अगला विरुद्द ते अजुवालो। परघल निज छारू मतिपालो ॥ ६ ॥ गुणगाम ग-डाले ए गायो सुणतां,सद्गुरु वेगो आयो । राजीहुए सघला रंगरली । जिनचंद्रनी आशा सफल फली ॥ ७ ॥ इतिपद्म् ॥

॥ ताल ठुमरी ॥

सदा सहाई कुशलसुरिंद गुरु द्यो दौलत गुरुरायजी (सदा०) खाई न खूटै खरची न तूटै । दिन २ वधै सवायजी (सदा०) ॥१॥ सकजा सुतओर सुंदर नारी । शुभ परिकर सुखदायजी [ सदा० ] मित्र समागम सुज-शवधारण । नितमति हरख उछाहजी [सदा०] ॥२॥ राजापरजा पाय नमें सहू । गुरुसम-

रण सुपसायजी (सदा० ) दोखी दुशमण नृप भय पडिया । सद्गुरु करय सहायजो ॥ ( सदा० ) ॥ ३ ॥ विषमी विरियां संकट पडियां । समर्यां आवै धायजी ( सदा० ) भूखां भोजन तिसियां पाणी । निरधनियां धन दायजो ॥ (सदा०) ॥४॥ संघ सकलने द्यो सुखशाता । जिम किरत जग थायजी ( स० ) थानक थिरता पारघल भोजन । पग पग कुशल सहायजी ( सदा० ) ॥५॥ अभय महा सुखदाई सद्गुरु । नवनिधि वंछित थायजी ( सदा० ) सुमति सवाइं नितघर संपद । दानविशाल लहायजी (सदा० ) ॥ ६ ॥ इति० ॥

॥ पुनः ॥

जिनकूशलसुरिंदगुरु सदानमो ( जि० )

सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर । देश देशांतर कांइ भमो ॥ ( जि० ) ॥ १ ॥ वाट घाट अरु विषमी विरयां। विघन बुराई दूर गमो ( जि० ) ॥ २ ॥ अहनिशि नांम मंत्र उरधारो । सुगुरुचरण चित रमो रमो ( जि० ) ॥ ३ ॥ इकमन ध्यावो वंछित पावो । विपत व्यथा सब दमो दमो (जि०) ॥ ४ ॥ अभय महासुख संपति पावो । सुथिर थांनक थिति जमो जमो । ( जि० ) ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

छत्रपतिथांरे पाय नमुंजी सुरनर सारे सेव । ज्योति थांरी जग जागतीजी । दुनियामें परतिख देव ॥१॥ हुंतो मोहि रह्यो-

जी ह्मांरा राज दादैरे दरबार ( हुं. )
केशर अंबर केवडोजी । कस्तुरी करपूर ।
चंपो चंदनराय चंबेली । भक्ति करुं भरपूर
(हुं.) ॥२॥ पांगूलियानें पाव समापै । आं-
धलियांनें आंख । रूपहीणानें रूपदेवै दादो ॥
पंखहीणांनें पांख [ हुं ] ॥ ३ ॥ चंदपाटोधर
साहिबो जो । श्रीजिनकुशलसूरिंद । आठ-
पोहर थांने ओलगै जी । रंग घणें राजिंद
[हुं०] ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

सद्गुरूजी सुणो मोरी अरजी स० ]
पहिली काम कीये बहु तेरे । आपणा बिरु-
द विचारी । पल पल चूक परी सद्गुरूजी ।
में मुतलबका गरजी ॥ [स०] ॥१ ॥ ध्यांन
तुमारो कबहु न ध्यायो । पुजा करी नही

री । तोई सेवकना वंछित पूर्या । आही थांरी मरजी ॥ [ स० ] । २ ॥ निश्चे सेतो तुमगुण गावै ॥ तुरत कटत दुख बेडी । भक्त उधार कहावत जगमें । ताहै करत हुं अरजी [ स० ] ॥ ३ ॥ और दवकूं मैं नहीं ध्याउं । शरण ग्रही मैं थारी । दूर थकी मैं भेटण आयो । विपत दशा सब तजी ॥ [स०] ॥ ४ ॥ कुशल गुरूका मैं हुं सेवक । लोक जाणे सब कोइ ॥ क्षमारतनकी बीनती सुणके । दरशण दीयो सद्गुरूजी ॥ [ स० ] ॥५ ॥ इति ॥

॥ होरीकी चालमें ॥

होरी-खेलो नेमसें धाय २ ( इस चालमें. )

सद्गुरू चरण चित लाय लाय । जिनदत्त सूरिंद गुरू करोरे सहाय । [ सद० ]

बावन वीर अनैं वलि चोसठ जोगणि। वसकीनो हर्ष लाय । विद्या पुस्तक सोवन अक्षर । थांभा वज्र विदार पाय [ सद० ] ॥ १ ॥ मुलतांनमें पंचपीर महाबल । पंच नदी सादी चित्त लाय । इत्यादिक बहु प-रचा पूरक । गुरू समर्यां सब दुक्ख जाय ॥ [ सद० ] ॥ २ ॥ गुरूके नामसें अट्ठसिद्धि नवनिधि । गुरूगुण गावो सबही धाय । श्रीजिनसौभाग्यसूरि सुगुरूपर । महिर करो गुरू सुखदाय [ सद० ] ॥ ३ ॥ इति.

॥ पुनः ॥

नेम श्यामसें कहियौ मोरी [ इस चा० में ]

गुरू पुज रचोरे सुग्यानी । भली हयै भक्ति भरानी ! [ गुरू० ] श्रीजिनकुशल

सूरिसर साहिब । खरतरगच्छराजानी देश देशमें थानक गुरू का । शोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समांनी [गुरू०] ॥१॥
केशर चंदन मृगमद भेली । खरणांरी पूज रचांनी । धूपदीप वलि आगल ढोवी । विधविध पुष्प चढानी । भला फल भेट धरांनी [गु०] ॥ २ ॥ वाट घाटमें चरचा पूरक । हाजर होत सहानी । श्रीजिनसौभाग्यसुरिके साहिब । वंछित काज करानी । सद्गुरू महिर लगानी [ गु० ] ॥ ३ ॥
इति पद्म् ॥

॥ राग प्रभाती ॥

श्री जिन कुशलसूरिसर साहिब । तुमहो पर उपगारी [श्री जि०] खरतरगच्छ

नायक गुणलायक । जिनचंद्रसूरि पटधारी [ श्री जिन० ॥१॥ संत उधारण सुजश व-धारण । भीड भंजन अति भारी । नाम तुमारो कुशल करण जग । वारी जाउं वार हजारी [ श्री जि० ॥ २ ॥ जगवत्सल तुमही हो जगतगुरू । करूणानिधि करतारी । कहै जिनचंद मेरेहो सदगुरू । हमहै शरण तुमारी [ श्री जि० ] ॥ ३ ॥

॥ पुनः ॥

श्री गणधर गुरू कुशलसूरिंदके चरण कमल पर वारी [ श्री ग० ] केशर चंदन अक्षत कुंकुम । जलभर कंचन झारी, देवके आगे मंगल दीपक । फूल धरुं फूलवारी [ श्री ग० ] ॥ १ ॥ ऐसी भांति करूं विध पूजा । आनेकै चित इकतारी । राज कहत

मेरे परम गुरुजी । बेर बेर बलिहारी [ श्री ग० ] ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

॥ रेखता ॥

कुशलगुरू देखकै दरसन । मेरा दिल होत हे परसन । जगतमें या समो कोई । न देखा नयनभर जोई ॥ १ ॥ बिरुद भूमंडलै छाजै । फरसतां पाप सहु भाजै । पूजतां संपदा पावै । अचिंती लछि घर आवै ॥२॥ इकै मुख गुण कहूं केता । मुझे विज्ञान नही एता । लालचंदकी अरज सुनलीजै । चरण-की शरण मोही दीजै ॥३॥ ॥ इति पदम् ॥

( राग केरबो. )

कुशलगुरू दरशण दीजै हो [कु०] खर-तरगच्छपति कुशलसूरिंदगुरू मुजपर महिर

धरिजै हो [ कु० ] । १ ॥ पतित उधारण
विरुद तुमारो । इनकी अरज सुणो जे हो
[ कु० ] ॥२॥ अ ि व्याधि अरू दोखी दु-
शमण । ए सबदूर हरा जै हो [ कु० ] ॥३॥
खेमरतन सेवककुं निसदिन । सद्गुरू सा-
धिन कीजै हो [ कु० ] ॥४॥ इति पदम् ॥

॥ पुनः ॥

वंसी हमारी दाजं [ इस चालमें ]

पूजो भजोरे भाई । गुरु महिमा योत
सवाई [ पू० ] ॥१॥ मृगमद केशर चंदन अ-
रचो । सुंदर पुष्प चढाई [ पू० ] ॥ २ ॥
भाविक जीव मिल गुरूगुण गावै । वाकै
सदगुरू होत सहाई । [ पू० ] ॥ ३ ॥ श्री
जिनसौभाग्यसूरि सुगुरू मेरे निशदिन हर्ष
बधाई [ पू० ] ॥ ४ ॥ इतिपदम् ॥

## ॥ पुनः ॥

(ढाल ॥ मालण ल्यावै फूलडा ए चाल)

॥ हुं तो अरज करूं करजोडनैजी म्हारी अरज सुणो महाराज । [सद्गुरू०] विरूद घणां छै राजरा जो । सूरि सकल सिरताज [स०] मुनिजर जोयजो साहिबा । थांरे रा· वल राणा राजवीजी । थांरा पूनिम पूजै पाय । [स०] ॥१॥ केशर अगरज कुंकुमांजी कांई मृगमद रही महीकाय [स०] मुनिजर जोयजो साहिब। ॥२॥ थांरै घुडलां रै आग- ल घुघराजो । ढुलत चमर गमहाल [स०] करण सेवै कामनीजी । कांई निरख करैजी निहाल [स०] (मुनिजर०) ॥ ३ ॥ थांरी गवी ठोडै थापनाजी कांई उ॰॰धागुर

आंबेर (स०) महिमा भलो गुरु मेडतैजी। काई सालूडै वाली सांगातेर । ( सद्गुरु० सु०) ॥४॥ थांरी ज्योति जगी गुरु झिगमिगेजी। काई बधती गढ बीकाण (स०) आशापुरण आवज्यो। थेतो देशवररा दीवाण (स० सु०) ॥ ५ ॥ ह्मांरा वीनतडी भलै मानीज्योजी ॥ काई दादाजी दीनदयाल (स०) कुशल सदा कविराजरै ॥ काई पाटोधर प्रतिपाल ॥ ( स० सु० ) ॥ ६ ॥ इतिपदम ॥

( लावणीको चालमें. )

सद्गुरु ह्मारा सरणें आयांजी लज्या राखज्या (स०) पतित उधारण विरुद सुणीने आयो तुमारै पास। अब मन वंछित पुरो माह्मारा। एहीज दिलकी आशजी ॥

( स० ) ॥१॥ काम क्रोध मद लोभ तजीने । तज दियो सब संसार । नवपदकोइक ध्यान धरीने । पाया सद्गुण पारजो ॥ ( स० ) ॥ २ ॥ देश देश में थुंभ विराजै । परचा जग विख्यात । इण कलु मांहै सुरतरु सरिखा ॥ प्रकट रह्या साक्षातजी ॥ (स०) ॥३। चिंतामणि और कामधेनु सम । माहरै तं हीज देव । आण धरु शिर ताहरी । (f करुं तुमारी सेवजी ॥ (स०) ॥ म बंधव तुं जगमें । हितकारी गुरुराग ५। राणा सहु जग मांहै । सेवै तुमार (स०) ॥ ५ ॥ आज गुरु तुम चरण ५. । सीधा वंछितकाज । लक्ष्मीप्रधान तुमारा दरशण । मोहन गुणका रायजी ॥ ( स० ) ॥ ६ ॥ इति० ॥ संपूर्णः ॥